36 कुल पोवार होनको मतलब

कही दूर शहर मा कोणी पोवार व्यक्ति मिले अना उनको संग पोवारी मा बात होसे तब वोन समया अलग च आपलोपन महसूस होसे। आपलो पोवार समुदाय व्यक्ति यानी मनमा एक विश्वास की निर्मिति होसे। पर कोणी व्यक्ति 36 कुल पोवार समाज को होनको मतलब का होसे।

36 कुल पोवार होनको मतलब 36 कुल मा लक एक कुल को वंशज होनो आय। 36 कुल पोवार यानी वय जे 1700 को दरम्यान पश्चिम मालवा धारानगरी को क्षेत्र लक इतन मध्य भारतमा रामटेक को नजिक नगरधन आयके गोंदिया, भण्डारा, सिवनी, बालाघाट ज़िला मा जायके बस्या लोग। पोवार यानी वय जिनको पुरखाईनकी बोली को नाम पोवारी से। पोवार यानी वय जिनक घर दसरा परा मयरी बनसे।

पोवार यानी वय जिनक यहान दिवारी मा दरवाजों परा गायखुरी बनाई जासे। पोवार यानी वय जिनको यहान बिहया मा बिजोरा की बरात जासे। जिनको यहान बिया तेल साई ओ तेल साई वालो मंगल गीत गायव जासे। बिहया मा कांकन बांधयव जासे। पोवार यानी वय जिनन आपलो घरमा पोवारी परम्परा, रीति, रिवाज, पूजन पध्दति, दस्तूर, रिश्तेदारी बनायके राखीसेन। पोवार यानी वय जिनका रिश्ता 36 कुल पोवारी मा एकदूसरो संग जुड़या सेत। पोवार होनको मतलब समाज मर्यादा को पालन करनो, आपलो संस्कृति ला धारण करनो। पोवार यानी वय जिनमा पोवारी संस्कार सेत।

महेन पटले

पोवारी संस्कृति आमरी संस्कृति

आमरो समुदायका अच्छा संस्कार, सीधोपना, शुध्द अना सहज वृत्ति, एकदूसरो को प्रति आत्मीयता, 36 कुल मा आपस मा रिश्ता नाता ये सब आमरी अनमोल धरोहर आय , या टिकनला होना । तुमी आपलो समाज को कोणी को च घर चली जाव असो लगे जसो वु तुमरो रिश्तेदार आय भले कोणती बी रिश्तेदारी रहे न रहे। आमला आमरो समाज को पाया मजबूत करनो जरूरी से। पोवारी संस्कृति, नीतिमूल्य नवी पीढ़ी को हर दिल मा जिंदा रहे येकी जबाबदारी आमरो पिढीला निभावनो पड़े। पोवार समाज मा कही अगर अतिक्रमण होत रहे त् वोको कसके विरोध करनो पड़े। समाज की पहचान त् आमला बनायके राखनो पड़े। मजबूती हर घर लका, हर व्यक्ति को द्वारा आये। आमी काइ अलग आजन असो देखावन को चक्कर मा बंदर वानी देखासिखी करनो को बजाए आमी खुद परा गर्व करबिन त् दुनिया आमरी इज्जत करे। आपलो संस्कृति को अस्तित्व को कारण आमरी इज्जत बनी रहे। आपली बोली की महत्ता, आपलो इतिहास की महत्ता खुद पहले स्विकारनो पड़े, दुनिया मंग मंग आमरो अस्तित्व की महत्ता स्वीकार कर लेये ।

बस आपलो भीतर ताकद भरण की जरूरत से..........

वैनगंगा के पँवार-उपनामोंका रूप-रूपान्तर

(बहुधा उज्जैनिया, धारिया, भोजपुरिया शैली मे)

संकलनकर्ता– पन्नालाल बिसेन
अधिवक्ता बालाघाट

क्रमांक	मूल शब्द	मूल अर्थ	अपभ्रंश रुप	वर्तमान रुप
१	अंबुलिया	जलधारी, जलके समीप रहनेवाला कमलरुप	अंबुल्या	अंबुलें
२	डालिया	शाखा प्रमुख	डाल्या, डाला	डाला / परिहार
३	टेम्भरिया	दीपशिखा वाला	टेंभर्या	टेंभरे
४	हिरणखेड़िया	हिरण का शिकारी	हरणखेड्या	हरिणखेडे
५	सोनवानिया	सोनवण्य में रहने वाला पतिवर्णी	सोनवान्या	सोनवानें
६	सहारिया	प्रकाशमान, तेजस्वी, आश्रयदाता	साहर्या	सहारे
७	कोल्हिया	मल्ल, बाहुबली	कोल्हया	कोल्हे
८	बोपचिया	वाचाल, वाक्पटु	बोपच्या	बोपचे
९	बघेलिया	बघेलखंड का निवासी	बघेल्या, बघेला	बघेले
१०	पटलिया	पट्ट प्रमुख या पट्टाधारी	पटल्या	पटले, पटेल, देशमुख (कटंगी क्षेत्र मे)
११	कटरा	काटनेवाला	–	कटरे, देशमुख (तुमसर क्षेत्र में)
१२	गौतम	वेदकालीन एक न्यायशास्त्री ऋषि	—	गौतम
१३	विश्वेन	विश्वज्ञ, विश्वपति, महाराजा	बिसेन, बिसन	बिसेन
१४	ठाकुर	भगवान, क्षत्रिय, वीर	ठाकर्या	ठाकुर, ठाकरे
१५	चव्हानि	चारभुजा वाला	चव्हाण	चौहान
१६	परिहार या प्रतिहार	प्रहार करनेवाला	–	परिहार
१७	चौंधरी	ग्राम का प्रमुख	—	चौंधरी
१८	जैतवार	विजय प्राप्त करनेवाला	–	जैतवार
१९	पारधी	शिकारी	–	पांरधी
२०	तुरुष्क	वेगवान, अश्वारोही	तुरुख, तुरुक	तुरकर, तुर्के
२१	पुंड	तिलक	पुंड	पुंड, पुंडे
२२	भगत	भक्त	–	भगत, भक्तवर्ती
२३	भैरम	भीषण ललकारवाला, भेरी बजानेवाला	–	भैरम
२४	भोयर	भुईयर, भोर मे जागनेवाला	—	भोयर
२५	राणा	राजा, योद्धा	राना	राणा, राने

क्रमांक	मूल शब्द	मूल अर्थ	अमभ्रंश रूप	वर्तमान रूप
२६	राऊत	राजवंशी, क्षत्रिय	—	राऊत
२७	राहंगडाला	आक्रमण करने वाला	—	राहंगडाले
२८	रनाहत	रण के आहत	रिनाहित	रिनाहित
२९	रंजहाड़	योद्धा	—	रंजहाड, रंजहास
३०	रणदिवा	रणवीर	—	रणदिवे
३१	रहमत	कृपालु	—	रहमत
३२	हणवत	हनन करने वाला	हनवत	हनवत, हनवते
३३	शरणागत	शरण मे आया	सरनागत	शरणागत
३४	येढ़ा	बलवान	येड़ा	येड़े, आड़े
३५	क्षीरसागर	क्षीर का सागर	खीरसागर	क्षीरसागर
३२	फरीद	प्रतिद्वन्द्वी, आकरणकारी	—	फरीद

पंवार (पोवार) समाज से संबंधित ऐतिहासिक तथ्य

(हर 36 कुल पंवार या पोवार व्यक्ति को जानने योग्य आवश्यक तथ्य)

इतिहास के अनुसार, हम पंवार या पोवार केवल और केवल 36 क्षत्रिय कुलों में विभाजित हैं।

■ 36 कुलों का उल्लेख इतिहासकार रसेल ने सन 1913 के आसपास अपनी पुस्तकों में किया है।
■ उसी कालखंड में, रसेल ने तत्कालीन सेंट्रल प्रोविंस के पंवार राजपूत कुलों का वर्णन किया है, जिनमें सभी कुल केवल हमारे 36 कुल ही हैं। इनमें 36 के बाहर कोई अन्य कुल शामिल नहीं है।
■ सन 1872 की ब्रिटिश एथनोलॉजिकल रिपोर्ट में भी हमारे समाज के जिन कुलों का वर्णन है, वे हमारे यही 36 कुल हैं।
■ सन 1892 में स्वर्गीय श्री लखारामजी तुरकर ने अपनी पुस्तक में लिखे दोहों में केवल छत्तीस कुलों का ही उल्लेख किया है।
■ स्वर्गीय पन्नालाल जी बिसेन, पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार महासभा, ने भी पंवार समाज के केवल 36 कुलों को मान्यता दी है।
■ सन 1998 में प्रकाशित *"India's Communities"*, वॉल्यूम 6, पृष्ठ क्रमांक 2839 पर श्री के. एस. सिंह ने 36 क्षत्रिय पंवार कुलों का स्पष्ट उल्लेख किया है। श्री सिंह Anthropological Survey of India के निदेशक थे।
■ रतलाम से हमारे साथ जो भाट समाज के सदस्य आए थे, उनके वंशज श्री बाबूलाल भाट द्वारा संरक्षित पोथियों में भी हमारे 36 कुलों का ही उल्लेख मिलता है।

हमारा 36 कुल क्षत्रिय पंवार समुदाय धारानगर, पश्चिम मालवा और राजपुताने से सन 1700 के लगभग नगरधन आया, और वहाँ से भंडारा, गोंदिया, बालाघाट तथा सिवनी जिलों में जाकर बस गया।

हमारे ये 36 कुल सदियों से एक साथ रहने के कारण हमारी संस्कृति, बोली, परंपरा, रीति-दस्तूर, पूजन-पद्धति, देवता और रक्तसंबंध सब में समानता पाई जाती है।

हमारे 36 कुलों के अतिरिक्त अन्य किसी समाज या कुल में विवाह नहीं होते थे। वर्तमान में यदि कहीं ऐसा होता है, तो उसे अंतर्जातीय विवाह माना जाता है।

हमारे विवाह योग्य सजातीय 36 कुल इस प्रकार हैं -अम्बुले, कटरे, कोल्हे, गौतम, चौहान, चौधरी, जैतवार, ठाकुर या ठाकरे, टेंभरे, तुरकर, पटले, परिहार, पारधी, पुन्ड, बघेले, बिसेन, बोपचे, भगत, भैरम, भोयर, एडे या येड़े, राणा, रहांगडाले, रिनायत, शरणागत, सहारे, सोनवाने, हनवत, हरिणखेडे, क्षीरसागर, डाला

(**नोट**: बाकी रणमत, फ़रीदाला , रजहांस, रंदीवा , रावत ये कुल नहीं मिलते))

1.5.1 मालवा के छत्तीस कुल क्षत्रिय और जाति पंवार

छत्तीस कुलों की सूची में सूर्यवंशी, चंद्रवंशी, अग्निवंशी सहित अन्य वंशों के क्षत्रिय भी शामिल किए गए हैं। यही तथ्य बाबूलाल भाट ने अपनी पोथी में भी लिखा है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि छत्तीस कुल पंवार(पोवार) समाज के सभी कुल, केवल अग्निवंशी परमार(पंवार) कुल या वंश से नहीं निकले हैं। बल्कि ये अलग-अलग वंशों के कुल हैं, जिनके संघ को ही ब्रिटिश दस्तावेजों में मालवा या धारानगरी के पोवार(परमार) राजपूत के रूप में उल्लेखित किया गया है।

प्राचीन ग्रंथों के अवलोकन से भी यह तथ्य स्पष्ट होता है कि युद्धों में छत्तीस क्षत्रियों को संगठित होकर भाग लेने का आह्वान किया जाता था। उदाहरणस्वरूप, जब पृथ्वीराज चौहान गौरी के विरुद्ध युद्ध के लिए जाते हैं, तब वहाँ भी छत्तीस क्षत्रियों से इस धर्मयुद्ध में शामिल होने का आह्वान किया जाता है।

"छतोस कुलो बर वंस विय। चढ़ि प्रथिराज नरिंद चर ॥
उपवन्न बंब बच्चों विष। खान थान द्रिगपाल इलि ॥छ०॥२४२॥"

(चंदबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो)

बीसलदेव रासो सहित अनेक प्राचीन ग्रंथों में भी ऐसे आह्वान के ऐतिहासिक साक्ष्य मिलते हैं। राजाओं के लिए युद्ध, धर्मयुद्ध माने जाते थे। पंवार राजा भोज के पास कोई स्थायी सेना नहीं थी और वे अपने युद्धों में योद्धाओं को धर्मयुद्ध मानकर लड़ने का आह्वान करते थे। उनके अधिकांश योद्धा या तो उनके अपने कुल के होते थे या फिर नातेदार कुलों से संबंध रखते थे।

इसी प्रकार, मालवा के परमार(पंवार) राजा और उनके नातेदार कुलों का एक संघ, छत्तीस क्षत्रिय कुलों के रूप में संगठित था। यही कारण है कि मालवा में इस संघ के आधार पर एक जाति के रूप में इसका विकास हुआ। इसका प्रमाण बीसलदेव रासो की निम्नलिखित पंक्तियों से मिलता है, जिसमें मालवा नरेश भोज की पुत्री राजमती स्वयं को पंवार(पंमार) बताती हैं। आगे की पंक्तियों में, वह अपने समाज के छत्तीस कुलों का उल्लेख करते हुए, अपने पति शाकंभरी नरेश बीसलदेव (विग्रहराज) से वियोग के दुःख का वर्णन करती हैं।

पाटे वश्ठा दुई राजकुमार। पहिरी वत्र जाद्र-सार ॥
कांन्हे कुडल आडीया। सरब सोनारो" मुकुट लोलाट ॥
रूप देखि राजा हसई । त्रिभुवन माहइ छर जाति पमार ॥ ५८ ॥

झुरई' सहोवर' रावं का। कुली छतीसइ झरइ सोही ॥
धार भूरई राजा भोज सू'। सामखा राव सो पडयो विछोह ॥ ६८ ॥
(नरपति नाल्ह कृत बीसलदेव रासो)

इस समुदाय ने अवंती राज्य पर हजारों वर्षों तक शासन किया, और इन पोवार(पंवार) राजाओं के परिवार को संस्कृत ग्रंथों में परमार कुल या वंश के रूप में उल्लेखित किया गया है। पौराणिक कथाओं में, गुरु वशिष्ठ के द्वारा आबूगढ़ में अग्निकुंड से अग्निवंशी क्षत्रियों की उत्पत्ति का विवरण मिलता है, जिसमें प्रमार(परमार) कुल की उत्पत्ति मानी जाती है।

इन्हीं राजाओं ने मालवा सहित अनेक क्षेत्रों में शासन किया, और अवंती नरेश सम्राट विक्रमादित्य, गुरु भर्तृहरि, राजा शालिवाहन को अपना पूर्वज माना है। इन राजाओं और उनके नातेदार पंवार(पोवार) कुलों की इतनी प्रसिद्धि हुई कि पंवारों को पृथ्वी की शोभा कहा जाने लगा। पंवार(परमार) राजा भोज ने अपनी राजधानी उज्जैन

पोवार(पंवार) समाज(राजपुत) के कुल(कुर)

(छत्तीस पुरातन क्षत्रिय कुलों का महासंघ)

१.अम्बुले(अमुले), २.बघेले(बघेल), ३.भगत(भक्तवर्ती), ४.भैरम, ५.भोएर, ६.बिसेन, ७.बोपचे, ८.चौहान, ९.चौधरी, १०.डाला, ११.तुरकर, १२.गौतम, १३.हनवत, १४.हरिनखेड़े, १५.जैतवार, १६.कटरे, १७.कोल्हे, १८.क्षीरसागर, १९.पटले, २०.परिहार, २१.पारधी, २२.पुण्ड, २३.राहंगडाले, २४.येड़े, २५.रिनायत, २६.राणा, २७.शरणागत, २८.सहारे, २९.सोनवाने, ३०. ठाकरे(ठाकुर), ३१.टेम्भरे

➢ रावत, फरीदाले, रणमत, रनदीवा और राजहंस कुलों को मिलाकर पोवार समाज का ३६ कुल(कुर) होने का इतिहास में उल्लेख मिलता है पर ये कुल वैनगंगा क्षेत्र में नही बसें इसीलिए अब बालाघाट, गोंदिया, सिवनी और भंडारा जिलों में स्थाई रूप से बसें पंवारों में रिश्ते सिर्फ इधर मौजूद इकतीस कुलों में ही होते हैं।

➢ गोरेगांव क्षेत्र में कुछ कटरे कुल के पोवार और वारासिवनी-कटंगी क्षेत्र के कुछ पटले कुल के पोवार खुद की सरनेम देशमुख भी लिख रहे हैं। हालाँकि देशमुख, पोवारी का कोई कुल नहीं है बल्कि यह पहले कभी इनकी उपाधि हुआ करती थी।

➢ महाराष्ट्र में कुछ पोवार अपने पुरातन कुल के साथ कर लगाकर इन्हे सरनेम के रूप में लिख रहें हैं, जैसे पारधीकर, येड़ेकर वैसे ही इधर कुछ राणा कुल के पोवार खुद की सरनेम राणे और बिसेन कुल के पोवार, बिसने सरनेम लिखने लगे हैं।

३६ कुल क्षत्रिय पंवार समुदाय के विवाह योग्य सजातीय कुल

अम्बुले , कटरे (देशमुख भी लिखते है महाराष्ट्र में) , कोल्हे ,गौतम, चौहान, चौधरी, जैतवार, ठाकुर या ठाकरे , टेंभरे या तेमरे , तुरकर या तुरुक , पटले (देशमुख भी लिखते है मध्यप्रदेश में) परिहार, पारधी , पुन्ड , बघेले , बिसेन , बोपचे , भगत या भक्तवर्ती , भैरम , भोयर, एडे या येड़े , राणा या राणे , रहांगडाले , रिनाईत या रिनायत , शरणागत , सहारे, सोनवाने , हनवत या हनुवत , हरिणखेडे , क्षीरसागर

क्षत्रिय पोवार(पंवार) समाज
नाम : पोवार(Powar) और पंवार/पँवार(Panwar)
धर्म : सनातन हिन्दू
कुलदेव: महादेव महाकाल
कुलदेवी: माँ काली भवानी
आराध्य देव : प्रभु श्रीराम
जय घोष: जय सियाराम, हर हर महादेव
मुख्य पूजा घर: देवघर
विशिष्ट दैवीयभोग - मयरी
विशेष पोवारी त्यौहार : डोकरी(क्षत्रिय माता) पूजा
कुल(कुर) : ३६
भाषा : पोवारी
मूल क्षेत्र: धारानगरी(मालवा)/राजपुताना
वर्तमान निवास : वैनगंगा क्षेत्र
(भंडारा, बालाघाट, गोंदिया, सिवनी)
पोवारी चौक : दिवाली का गायखुरी चौक